ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 22 कुल पृष्ठ-8 03 से 09 नवम्बर, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 का. शु.-11

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य के उत्तम स्वास्थ्य की कामना के लिए आयोजित

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन उत्साह के साथ हुआ सम्पन्न

विश्व विख्यात योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज ने यज्ञ में सम्मिलित होकर दिया आशीर्वाद

प्रतिष्ठित आर्य संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी की रही गरिमामयि उपस्थिति

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने यज्ञ के ब्रह्मा पद को किया सुशोभित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी का गत दिनों हृदयाघात के कारण काफी स्वास्थ्य बिगड़ गया था। ईश्वर की कृपा से उनके स्वस्थ हो जाने पर आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना ने उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य की कामना के लिए उनके पैतृक गांव–गुरुमिटकल जिला–यादगिर में यजुर्वेद पारायण यज्ञ करने का निर्णय करके दिनांक 14, 15 एवं 16 अक्टूबर, 2022 को रमणीक पहाड़ियों के मध्य स्थित श्री श्री लक्ष्मी तिम्मप्पा देवस्थान सुक्षेत्र बोरबण्डा, गुरुमिटकल, यादगिर मंदिर के प्रांगण में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित करने के लिए आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री जी मुम्बई से पधारे।

कार्यक्रम का उद्घाटन 14 अक्टूबर, 2022 को विश्वविख्यात योगगुरु पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज ने किया। अपनी अत्यन्त व्यस्तताओं में से समय निकालकर स्वामी रामदेव जी यज्ञ में पहुँचे और उपस्थित हजारों लोगों को सम्बोधित किया। स्वामी रामदेव जी ने प्रो. विट्ठलराव आर्य जी को आर्य समाज की धरोहर बताया और उन्होंने कहा कि विट्ठलराव जी को अभी कम से कम 25 वर्ष तक आर्य समाज का कार्य करना है। अतः उनका स्वास्थ्य अच्छा रहे इसके लिए हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। स्वामी रामदेव जी ने यह भी कहा कि प्रो. विट्ठलराव आर्य न केवल विद्वान् तथा आर्य नेता हैं बल्कि मुझे यह जानकर और खुशी हुई कि वे एक फक्कड़ फकीर भी हैं। उनका जीवन एक संन्यासी के समान है। उन्होंने पूरा जीवन आर्य समाज को समर्पित किया हुआ है। स्वामी जी ने पूरे देश में वैदिक संस्कृति को प्रचारित–प्रसारित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा अब वह समय आ गया है जब हम सभी को मिलकर भारत के प्राचीन गौरव को पुनः लौटाना है। इस कार्य में प्रो. विट्ठलराव जी की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी। पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के आने की सूचना मिलने पर तेलंगाना तथा कर्नाटक के पतंजलि योग समिति के हजारों सदस्य कार्यक्रम स्थल पर एकत्रित हो गये। भारी वर्षा होने के बावजूद पूरी भीड़ स्थिर चित्त होकर स्वामी जी महाराज को सुनने के लिए डटी रही। स्वामी रामदेव जी ने अपने हृदय से प्रो. विट्ठलराव जी के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य की कामना करते हुए अपना आशीर्वाद दिया। स्वामी रामदेव जी महाराज के साथ भारत स्वाभिमान तथा पतंजलि योग समिति के केन्द्रीय मुख्य स्तम्भ डॉ. यशदेव शास्त्री जी ने भी अपनी गरिमामयि उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

प्रतिदिन प्रातः एवं सायं चलने वाले यजुर्वेद पारायण यज्ञ में गुरुकुल विश्व एकनीड्म् तथा वेद विद्यालय मलकपेट, हैदराबाद के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया। आचार्य सोमदेव शास्त्री जी के साथ आचार्य उदयन जी, आचार्य धनंजय जी तथा वेद विदुषी डॉ. वसुधा शास्त्री एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता पं. धर्मपाल शास्त्री जी ने पूरा सहयोग दिया। ज्योतिष के प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी ब्रह्मानन्द (बडलूर), अनेक गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, ओजस्वी वक्ता स्वामी आर्यवेश जी एवं तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी की गरिमामयि उपस्थिति से यह कार्यक्रम अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावशाली बना रहा। इनके अतिरिक्त स्थानीय विधायक श्री नागन्ना गौड़ जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, आर्य वीरदल के राष्ट्रीय संयोजक श्री भंवर लाल आर्य, आर्य वीरदल राजस्थान के संयोजक श्री चांदमल आर्य, आर्य जगत की गौरव बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश शेष पृष्ठ 4 पर

भारतीय संस्कृति और मानवता

– डॉ. त्रिलोचन सिंह बिन्द्रा

भारतीय संस्कृति मनुष्य के सर्वांगीण विकास तथा उन्नति के सर्वाधिक मार्ग प्रस्तुत करती है। भारतीय संस्कृति में क्षुद्र सांसारिक सुखोपभोग से ऊपर उठकर पारमार्थिक रूप से जीवन-यापन को विशेष रूप से प्रधानता दी गई है। मानवता के पूर्ण विकास तथा निर्वाह को दृष्टि से रखकर ही भारतीय संस्कृति में जीवनचर्या की मान्यताएँ निर्धारित की गई हैं। मनीषियों ने भारतीय संस्कृति का आधार जिन मान्यताओं को माना है, उन पर निम्न प्रकार से विचार किया जा रहा है।

1. सुख-शान्ति की प्राप्ति का आधार आन्तरिक श्रेष्ठता ही है - भारतीय मनीषियों के अनुसार, सुख-शान्ति की उपलब्धि इन्द्रियों को विषयों से तृप्त करने से नहीं हो सकती, क्योंकि नई-नई सांसारिक वस्तुओं की इच्छाएं एवं तृष्णाएं निरन्तर उत्पन्न होती रहती हैं। मनुष्य का स्वभाव ऐसा है कि एक वासना अभी पूर्ण नहीं होती कि दूसरी वासना उत्पन्न हो जाती है। मनुष्य अपार धन-संग्रह करता है, काम-वासना में सुख ढूँढ़ता है, लूट-खसोट, धोखा-धड़ी, छल-प्रपञ्च तथा अनेक प्रकार के षड्यन्त्र करता है। नशेबाजी एवं ईर्ष्याद्वेष में पड़ा रहता है, पर उसे स्थायी सुख-शान्ति की प्राप्ति नहीं होती। इस प्रकार मात्र मृगतृष्णा में ही जीवन नष्ट कर देता है। हमारे मनीषियों ने यही निष्कर्ष निकाला था कि सांसारिक भोग कभी भी मनुष्य को स्थायी सुख-शान्ति उपलब्ध नहीं करा सकते। हमारी स्थायी सुख-शान्ति का केन्द्र भौतिक सामग्री न होकर आन्तरिक श्रेष्ठता ही है। इसीलिए आन्तरिक शुद्धि के लिए भारतीय संस्कृति में त्याग, बलिदान एवं संयम पर विशेष बल दिया गया है।

2. अपनी इन्द्रियों के नियन्त्रण के लिए अपने साथ कठोरता का बर्ताव करना चाहिए - भारतीय संस्कृति के अनुसार मनुष्य को अपनी इन्द्रियों के ऊपर कठोर नियन्त्रण करना चाहिए। जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं के ऊपर नियन्त्रण कर सकेगा, वही वस्तुतः दूसरों की सेवा कर सकता है। जैसा मनुस्मृति (2.215) में भी कहा गया है - ''जो मनुष्य अपनी इन्द्रियों का दास है, उसे समस्त दोष अपनी ओर खींच लेते हैं। इन्द्रियां इतनी बलवान हैं कि वे विद्वानों को भी नहीं छोड़ती।'' इस प्रकार यदि हम अपनी बुरी आदतों पर नियन्त्रण नहीं करेंगे तो हमारी सम्पूर्ण शक्तियों का नाश हो जायेगा। आदर्श मानव वह है जो दम, दान एवं यम का पालन करता है। इन तीनों में भी दम अर्थात इन्द्रिय दमन मुख्य है। इन्द्रिय दमन आत्म तेज और पुरुषार्थ को बढ़ाने वाला है। यह मानवता के विकास के लिए उत्तम है। संसार में धर्म तथा शुभकर्मों में इन्द्रिय दमन का महत्व विशेष है। जिस व्यक्ति ने इन्द्रिय दमन द्वारा अपने को वश में नहीं किया, उसका वैराग्य धारण करना भी व्यर्थ है। जिसने अपने मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण कर लिया है, उसको घर का त्याग कर जंगल और वन में जाने की आवश्यकता नहीं है। जितेन्द्रिय पुरुष जहां भी निवास करता है वहीं उसके लिए महान् आश्रम है। भारतीय संस्कृति जहां एक ओर इन्द्रिय संयम पर बल देती है, वहीं दूसरी ओर वह दूसरों के प्रति अधिक से अधिक उदार होने का उपदेश देती है। अतः सच्चे भारतीय को दूसरों की सेवा, सहयोग और सहायता के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।

3. अपने अन्दर सदा सद्भावों का विकास करते रहना चाहिए - भारतीय संस्कृति का लक्ष्य रहा है - ''शीलं हि शरणं सौम्य'' (अश्वघोष) अर्थात् सत्-स्वभाव ही मनुष्य का रक्षक है। उसी से अच्छे समाज और अच्छे नागरिक का निर्माण होता है। अन्तरात्मा में छिपे हुए सद्गुणों का अधिक से अधिक विकास करना चाहिए। जैसे कि महाभारत के शान्तिपर्व (193.18) में भी कहा गया है - ''समस्त तीर्थों में अन्तरात्मा ही परम तीर्थ है। समस्त पवित्रताओं में अन्तरात्मा की पवित्रता ही मुख्य है।''

हमारी संस्कृति सदा यह स्वीकार करती रही है कि मानव की अन्तरात्मा में जीवन और समाज को आगे बढ़ाने और सन्मार्ग पर ले जाने वाले सभी भाव और शुभ संस्कार भरे पड़े हैं। इस अन्तरात्मा से ही समस्त प्राणी मार्गदर्शन पाते हैं। सत्य तो यह है कि यह अन्तरात्मा ही उपदेशक और पथ-प्रदर्शक है। अतः हमें अन्तरात्मा के गुणों का विकास करना चाहिए। अन्तरात्मा के विकास से ही सच्ची मानवता प्राप्त हो सकती है।

4. व्यक्तिगत आवश्यकताओं को सदा कम करना चाहिए - भारतीय संस्कृति में विश्वहित की कामना को बहुत अधिक महत्व दिया गया है, अर्थात व्यक्तिगत आवश्यकताओं को सदा घटाते रहने का और समय, शक्ति तथा योग्यता का अधिकांश भाग विश्वहित में लगाते रहने का। कम से कम खा-पहन कर, दूसरों की अधिक से अधिक सेवा करना, भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है।

भारतीय संस्कृति ने ऐसे अनेक गृहस्थ उत्पन्न किए हैं, जिन्होंने पूरे राज्य का संचालन करते हुए अपने-आप को उससे पूर्णतया अनासक्त रखा और अपने शरीर तक का भी मोह नहीं किया। महाराज जनक की जीवनचर्या ऐसी ही थी, इसीलिए उन्हें विदेह कहा जाता है। विरक्त शिरोमणि श्री शुकदेव जी भी तुलाधार वैश्य थे। अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताएं घटाकर वे सदा ग्राहक का ही हित देखते थे। महर्षि याज्ञवल्क्य एक कौपीन और जलपात्र के अतिरिक्त कभी कुछ अपने पास नहीं रखते थे। भारतीय संस्कृति में ऐसे अनेक ज्ञानियों के उदाहरण भरे पड़े हैं, जिन्होंने निष्कामभाव से परोपकार और प्राणिमात्र की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था।

5. शुद्ध कमाई ही सदा करनी चाहिए - भारतीय संस्कृति ने मेहनत और ईमानदारी से प्राप्त कमाई पर बल दिया है। मुफ्त की कमाई, रिश्वतखोरी, घूस, लूट-खसोट से पैसा पैदा न करें - यह हमारा सिद्धान्त रहा है। अथर्ववेद (6.117.2) में कहा गया है - ''ऋण लेना भी एक प्रकार की चोरी ही है। हम अपनी सात्विक कमाई से अधिक खर्च न करें। पाप की कमाई जन्म-जन्म तक दुःख रूपी नरक में पड़े रहने की तैयारी है।''

अथर्ववेद (7.115.4) में आगे पुनः कहा गया है - 'पुण्य से कमाया हुआ धन ही सुख देता है। जो पाप से कमाया धन है, वह नाश करने वाला होता है।'

मनुस्मृति (5.106) में भी, 'शुद्ध परिश्रम और ईमानदारी द्वारा प्राप्त धन से ही निर्वाह करने पर जोर दिया गया है।' जो कमाई शुद्ध है, उसका उपयोग करने वाला व्यक्ति ही वास्तव में शुद्ध कहा जा सकता है। तात्पर्य यह है कि जो पराया धन नहीं हरता और न्याय से धन का उपार्जन करता है, वह शुद्ध है। पाप या अन्याय से कमाई करने वाला व्यक्ति शुद्ध नहीं है। अथर्ववेद (7.115.1) में कहा गया है कि 'पाप की कमाई छोड़ दो। पसीने की कमाई से ही मनुष्य सुख पाता है।' आगे अथर्ववेद 3.20.5) में ही फिर कहा गया है कि 'दान देने के लिए धन कमाओ। विलासिता के लिए नहीं।' भारतीय संस्कृति के अनुसार धन उन्हीं के पास ठहरता है, जो सद्गुणी होते हैं। दुर्गुणी की विपुल सम्पदा भी स्वल्पकाल में ही नष्ट हो जाती है।

6. समन्वय और सहिष्णुता - सहिष्णुता भारतीय संस्कृति का एक विशेष गुण है। इसके अनुसार दूसरों की परिस्थितियों को समझते हुए, विचार-विभिन्नता होते हुए भी हमें सहिष्णुता नहीं छोड़नी चाहिए। समस्त जीवों के प्रति हम उदार रहें, सभी को अपने समान समझें और उनके प्रति प्रेमभाव रखें, यही हमारी संस्कृति सिखाती है।

7. मनुष्य अन्दर बाहर से सदा स्वच्छ रहे - हमारी संस्कृति में स्वच्छता का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे यहाँ स्वच्छता की शिक्षा जीवन के प्रारम्भ से ही आरम्भ हो जाती है। प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है कि वह स्वयं तो स्वच्छ रहे ही, अपने घर एवं वातावरण को भी स्वच्छ रखे। स्वच्छता तथा पवित्रता का अर्थ केवल बाहरी सफाई ही नहीं है, प्रत्युत आन्तरिक स्वच्छता पर भी सदा ध्यान रखा जाना चाहिए। पाप की भावना न रखना और मन में विकार न लाना भी आन्तरिक स्वच्छता का ही अंग है। जल में शरीर को डुबो लेना मात्र स्नान नहीं कहलाता। जिसने इन्द्रिय दमन रूपी तीर्थ में स्नान किया है अथवा मन और इन्द्रियों को वश में रखा है, उसी ने वस्तुतः स्नान किया है। जिसने मन की मैल को धो डाला है, वही शुद्ध है।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में मानवता की रक्षा और विकास के सभी आधार भूत सिद्धान्त भरे पड़े हैं। इनका पालन करने से ही मनुष्य सच्चे अर्थों में सम्पूर्ण मानव बन सकता है।

- साधु आश्रम, होश्यारपुर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

31 अक्टूबर जयन्ती पर विशेष

भारत को फिर पटेल चाहिए

- आचार्य उमाशंकर शास्त्री 'वैदिक प्रवक्ता'

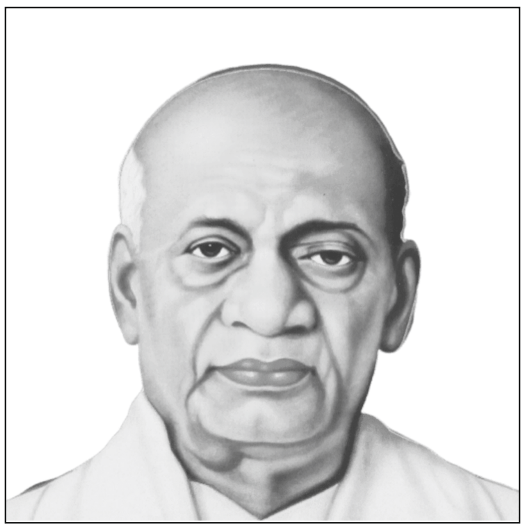

कभी सोने की चिड़िया और विश्व गुरु कहलाने वाला हमारा देश आज घोटालेबाजों और भ्रष्टाचारियों का देश कहलाने लगा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति में जिन हुतात्माओं, बलिदानियों और देश भक्तों का योगदान रहा उनकी चर्चा यदा-कदा उनकी जयंती व पुण्यतिथि के रूप में मनाकर अपने कर्तव्यों की 'इतिश्री' कर लेते हैं। जिन महान देशभक्तों ने हमारे देश की क्यारियों को अपने रक्त से सींचा उनके नाम मात्र लेने से स्मृतियों के नाटक मात्र से हमारे देश की गरिमा व स्वाभिमान वापस आने वाला नहीं। आजादी के बाद टुकड़े-टुकड़े में बिखरे हमारे देश की रियासतों को एक सूत्र में बांधकर एक विशाल 'भारतवर्ष' देश के रूप में साकार करने वाला महानायक राष्ट्र भक्त लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल को यदि हम याद न करें तो कृतघ्नता होगी। कृतघ्नतारूपी महापाप से ग्रसित हो हम अपने आप को क्षमा नहीं कर सकेंगे। 31 अक्टूबर, 1875 को भारत माता की अमृतमयी गोद में जन्म लेकर जिस दिव्यात्मा ने 565 छोटे-छोटे रजवाणों को अपने परम पुरुषार्थ से एक कर महान भारतवर्ष का निर्माण कर विश्व पटल पर एक अनुपम कीर्तिमान स्थापित किया ऐसे महापुरुष के 136वीं जयन्ती पर उनके 'पुरुषार्थ द्वारा राष्ट्रनिर्माण' की चर्चा कर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर मैं अपने को धन्य समझ रहा हूँ। हम सभी भारतवासी पहले राष्ट्र फिर मैं की भावना को आत्मसात कर लौहपुरुष की जयंती मनाकर ऋण (ऋषि ऋण) से उऋण होने का प्रयत्न करें।

11 अगस्त, 1947 को दिल्ली के रामलीला मैदान में भाषण देते हुए सरदार पटेल ने रियासतों से कहा - चार दिन पश्चात् विदेशी सरकार चली जायेगी अतः रियासतें 15 अगस्त तक भारतीय संघ में सम्मिलित हो जायें अन्यथा उनके साथ कठोर व्यवहार किया जायेगा।'' सरदार पटेल की इस चेतावनी का भारी असर हुआ। 14 अगस्त 1947 तक हैदाराबाद, जूनागढ़, कठियावाड़ और कश्मीर को छोड़कर भारत की लगभग सभी रियासतें भारत राज्य में शामिल हो गई। 15 अगस्त को भारत के आजाद होते ही सभी रियासतों पर से ब्रिटिश सत्ता हटा ली गई। जिन राज्यों में मुसलमानों की संख्या अधिक थी वह भारत के साथ शामिल होने से इन्कार कर दिया। उनकी सहानुभूति पाकिस्तान के साथ थी परन्तु भौगोलिक दृष्टि से सभी रियासतें भारत की अभिन्न अंग थी। जूनागढ़ के नबाव की सहानुभूति पाकिस्तान के साथ थी। अतः कराची से 300 किमी की दूरी पर होते हुए भी उसने पाकिस्तान में शामिल होने की जिद की जबकि इस रियासत की 80 प्रतिशत जनता हिन्दू थी। 15 अगस्त को उसने चुपचाप अपनी रियासत को पाकिस्तान में विलय कर दिया। सरदार पटेल ने बड़ी कूटनीति से काम लिया और उन्होंने एक ओर बम्बई से जूनागढ़ की अस्थायी सरकार गठित की तथा दूसरी ओर जूनागढ़ में सेना भेजने का फैसला कर लिया। 27 सितम्बर को एक निर्णायक बैठक में माउण्टबेटन ने जूनागढ़ के मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ ने भेजने का प्रस्ताव रखा। यह सुनते ही सरदार पटेल बिगड़ गये, उन्होंने नेहरू की भी नहीं सुनी और मामला तुरंत हल करने के लिए जूनागढ़ के चारों ओर सेना तैयार कर दी। अक्टूबर के अंत तक अस्थायी सरकार की सेना ने पूरी रियासत पर कब्जा कर लिया। जूनागढ़ की सेना ने हथियार डाल दिये और जूनागढ़ का नबाव और दीवान नकदी और जवाहरात लेकर पाकिस्तान भाग गये। 13 नवम्बर 1947 को सरदार पटेल ने कठियावाड़ क्षेत्र के दक्षिण पश्चिम में स्थित जूनागढ़ रियासत पहुचे। वहाँ की जनता ने उनका भव्य स्वागत किया पूरे कठियावाड़ क्षेत्र के हिन्दू व मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए कहा - जो लोग अब भी दो राष्ट्रों के सिद्धान्तों को मानते हैं और जिनकी हमदर्दी पाकिस्तान से है, उनके लिए कठियावाड़ में कोई स्थान नहीं है, जिनके मन में हिन्दुस्तान के प्रति वफादारी नहीं है वे पाकिस्तान चले जाए। 20 फरवरी 1948 को जूनागढ़ में जनमत संग्रह कराया गया। केवल 9 लोगों ने पाकिस्तान के पक्ष में मत दिया 20 फरवरी 1949 को इन सभी रियासतों को सौराष्ट्र संघ के अधीन घोषित कर दिया गया।

जूनागढ़ की तरह हैदराबाद का निजाम मीर उस्मान अली भी भारत में शामिल होना नहीं चाहता था। वह अपने को स्वतंत्र राज्य घोषित करना चाहता था। उसके साथ सरदार पटेल और माउंटबेटन ने कई बार समझौता किया। उसने किसी समझौते का पालन नहीं किया। हैदराबाद के नबाव ने भारत से पूछे बिना पाकिस्तान को 20 करोड़ का ऋण दे दिया और भारत को धमकी दी ''यदि भारतीय संघ हैदराबाद में हस्तक्षेप करेगा तो उसे वहाँ डेढ़ (1.5) करोड़ हिन्दुओं की हड्डियाँ और राख के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा।''

हैदराबाद की समस्या बहुत बिगड़ चुकी थी। पाकिस्तान से चोरी-छिपे हथियार हैदराबाद पहुंच चुके थे हजारों कांग्रेसी कार्यकर्ता पकड़कर जेलों में ठूसे जा चुके थे। हिन्दू जनता पर जुल्म जारी था। कांग्रेस संगठन को अवैध घोषित कर दिया गया था और मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ ले जाने की तैयारी हो रही थी। 9 सितम्बर 1948 को नेहरू के विरोध के बावजूद जे. एल. चौधरी के नेतृत्व में ''आपरेशन पोलो'' के लिए सेनाओं को हैदराबाद भेज दिया गया। भारतीय सेनाओं ने हैदराबाद की सेना के छक्के छुड़ दिये। इस कार्य में आर्य समाज ने अपने आन्दोलन के द्वारा भारत सरकार की विशेष सहायता की थी। नवाब पूंछ दबाकर भागा। फिर सख्ती से वहां पुलिस बल का इस्तेमाल कर सारी बिगड़ी हुई स्थितियों पर काबू कर लिया गया। जवाहर लाल नेहरू इतनी उग्र कार्यवाही के पक्ष में न थे, परन्तु यदि ऐसी कार्रवाई न की गई होती तो हैदराबाद भारत का हिस्सा न होता।

नेहरू जी के ढील और गलत आकलन के कारण भारत की सबसे खतरनाक मोड़ केवल एक रियासत की समस्या ने ले लिया। वह है कश्मीर समस्या। शेख अब्दुल्ला के प्रभाव में आकर नेहरू जी ने कश्मीर के मामले को सरदार पटेल के रियासत विभाग से अलग कर लिया। ब्रिटिश सत्ता के हस्तांतरण के समय कश्मीर नरेश महाराजा हरिसिंह स्वतंत्र कश्मीर की कल्पना कर बैठे। पाकिस्तान के साथ उन्होंने यथास्थिति बनाये रखने का समझौता कर लिया और पाकिस्तान के सहयोग को स्वीकार कर लिया। सहयोग की आड़ में पाकिस्तान ने कश्मीर में कबालियों को उठाकर हस्तक्षेप आरम्भ किया। अक्टूबर 1947 में जब कबायली कश्मीर के एक हिस्से पर कब्जा कर श्री नगर की ओर बढ़ने लगे तब महाराजा हरिसिंह को अपनी गलती और गलतफहमी का एहसास हुआ। परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उन्होंने वायसराय माउंटबेटन को पत्र लिखा कि वे भारत अधिराज्य में शामिल होने को इच्छुक हैं। भारत तुरंत सैन्य बल से कश्मीर बचाने में उनकी सहायता करे। पंडित नेहरू स्पष्ट निर्णय नहीं ले पा रहे थे। उनका मन कश्मीर मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने का था। सरदार पटेल को नेहरू जी की सोच बिल्कुल पसंद नहीं आई, उन्होंने कश्मीर मामले को संयुक्त राष्ट्र में ले जाने का खुला विरोध किया और कश्मीर में सैनिक कार्यवाही कर कबायलियों को पीछे भागने पर विवश कर दिया। परन्तु नेहरू जी नहीं माने, नेहरू प्रधानमंत्री थे और कश्मीर को विशेष राज्य के रूप में स्थापित करना चाहते थे। वे संयुक्त राष्ट्र संघ चले गये और उस रियासत के मामले को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में न्याय हेतु लटका आए, जिसका पूर्ण अधिकार महाराजा हरिसिंह साफ तौर पर हिन्दुस्तान को सौंप चुके थे। सरदार पटेल ने बड़े दुख के साथ कहा था - ''यदि जवाहर लाल और गोपाल स्वामी आयंगर ने कश्मीर को अपना व्यक्तिगत विषय बनाकर मेरे गृह विभाग से अलग न किया होता तो कश्मीर की समस्या उसी प्रकार हल होती जैसे की हैदराबाद की।'' कश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्र संघ में उलझाने और कश्मीर में पाकिस्तान के खिलाफ कठोर कदम न उठाने देने की नेहरू की नीति से सरदार पटेल इतने चोट खा गये थे कि उन्होंने नेहरू जी को 'भारत का सबसे पक्का मुसलमान' तक कह डाला। हिन्दुओं के साथ हुए मुसलमानों के विश्वासघात ने उन्हें मुस्लिम विरोधी बना दिया था। वैसे राष्ट्रीय मुसलमानों के प्रति सरदार पटेल के दिल में पूरी इज्जत थी, परन्तु वैसे मुसलमान जो हिन्दुस्तान में रहकर हिन्दुस्तान के साथ गद्दारी और पाकिस्तान के साथ वफादारी की भावना रखते, उनके कट्टर विरोधी थे।

देश की समस्याओं से निरन्तर जूझने, विषम परिस्थितियों में लोहा लेने तथा अपने साथियों का पूरा-पूरा सहयोग न मिल पाने तथा नेहरू द्वारा उनसे दूरी बनाये रखने की स्थिति से संसार की विशाल ताकत को अपने पैरों के नीचे रौंद देने वाला वह लौह पुरुष बेहद टूट गया। धीरे-धीरे उन्हें हृदय रोग ने दबोच लिया 76 वर्ष की आयु में 15 दिसम्बर, 1950 को बम्बई में उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।

सरदार बल्लभ भाई पटेल आज हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनकी कीर्ति, राष्ट्रीय एकता व राष्ट्र निर्माता के रूप में आज भी बच्चा-बच्चा उन्हें जानता है। आज देश की स्थिति को देखकर कवि को लिखना पड़ता है :-

फूल आज तेज शमशीर हो गये, शासक यहाँ के बनवीर हो गये।
सारा देश आज तो सराय हो गया, भारत समूचा पन्ना धाय हो गया।
एक परिवार का ही चक्र घूमता, लोकतंत्र रावणों के पाँव चूमता।
भेड़ियों से देश को बचाना चाहिए, क्रांतिगीत ऐसा कोई गाना चाहिए।
बगिया को नहीं विष बेल चाहिए, माली कोई दूसरा पटेल चाहिए।
दिल टूटता है उसे मेल चाहिए, सूनी सी पटरियाँ हैं रेल चाहिए।
देश द्रोहियों के लिए जेल चाहिए, भारत को फिर से पटेल चाहिए।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन, जसवन्त कालेज के पास, रातानाड़ा, राजस्थान
मो. - 0-7891860269, 9982618669, 9905416899

पृष्ठ 1 का शेष

पं. धर्मपाल शास्त्री, आचार्य उदयन जी मीमांसक, आचार्य धनंजय जी, श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी, बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या जी एवं डॉ. वसुधा शास्त्री जी ने दी शुभकामनाएँ

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना एवं पतंजलि योग समिति के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने सम्पूर्ण आयोजन की व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई

आर्या, आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना के उपप्रधान युवा विद्वान् श्री हरिकिशन वेदालंकार, सभा के कर्मठ मंत्री श्री रघु रामुलू एडवोकेट, सभा के कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जायसवाल, श्री विष्णुपाल, श्री अशोक वशिष्ठ, पतंजलि योग समिति के पदाधिकारी भी प्रो. विट्ठलराव जी को अपनी शुभकामनाएं प्रदान करने के लिए कार्यक्रम में सम्मिलित थे। व्यवस्था में श्री निवास आर्य, श्री अमर आर्य, श्री गोविन्द राव आर्य, श्री वेद मित्र आर्य के अतिरिक्त अन्य कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अथक परिश्रम किया।

इस अवसर पर संन्यासियों एवं विद्वानों के प्रवचन एवं व्याख्यान भी होते रहे तथा दोनों समय यज्ञ में आहुति देने के लिए लोगों का तांता लगा रहा। प्रो. विट्ठलराव आर्य जी की लोकप्रियता का अनुमान लोगों की उपस्थिति से स्वयमेव हो रहा था। हजारों लोग उन्हें अपनी शुभकामनाएं देने के लिए इस कार्यक्रम में आये हुए थे। कार्यक्रम में भोजन, आवास आदि की भी समुचित व्यवस्था की गई थी। अन्तिम दिन प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने अपने संकल्प के अनुरूप सभी संन्यासियों, विद्वानों, वेद पाठियों तथा विशिष्ट कार्यकर्ताओं का शॉल, श्रीफल आदि देकर शानदार स्वागत किया। वहीं उन्होंने अपने पारिवारिक जनों का भी वस्त्र आदि देकर सम्मान किया। लोग उनकी इस भावना तथा सम्मान के कार्य से अत्यन्त प्रभावित हुए।

यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि प्रो. विट्ठलराव जी आर्य के गत् दिनों अस्वस्थ हो जाने पर जहां स्वामी रामदेव जी महाराज एवं आचार्य बालकृष्ण जी महाराज ने अति विशेष सहयोग किया वहीं स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, श्री अशोक वशिष्ठ, बहन प्रवेश आर्या एवं बहन पूनम आर्या और श्री विष्णुपाल आदि सभी साथियों ने मनोयोग से उनकी सेवा एवं देख–रेख का दायित्व पूरी निष्ठा के साथ निभाया था। प्रोफेसर साहब के बीमार होने के दौरान हैदराबाद से भी जहां सभा के अधिकारी श्री हरिकिशन वेदालंकार, श्री रघु रामुलू एडवोकेट, श्री अशोक जायसवाल, श्री शिव कुमार तथा प्रोफेसर साहब के परिवार जन भी उन्हें देखने और सहयोग करने के लिए दिल्ली पहुंचे थे, वहीं दूर–दूर से लोगों ने अपनी शुभकामनाएं उनके स्वास्थ्य के लिए प्रेषित की थी तभी प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने यह संकल्प लिया था कि वे अपने पैतृक गांव में जहां से उनका लगभग 50 वर्ष से सम्पर्क नहीं है, एक ऐसा यज्ञ का आयोजन करेंगे जिसमें अपने सभी विशिष्ट सहयोगी संन्यासियों, विद्वानों, कार्यकर्ताओं को आमंत्रित करके सम्मानित किया जायेगा। वहां परिवार के भी सदस्यों को भी मैं अपनी ओर से सम्मानित करूँगा। उन्होंने अपने उस संकल्प को बड़ी भावना के साथ पूरा किया। इस अवसर पर प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने अपने स्वस्थ होने में जिन–जिन महानुभावों का विशेष सहयोग रहा उनका भी हार्दिक धन्यवाद किया और उन्होंने स्वामी रामदेव जी का विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनका यह सहयोग मुझे सदैव स्मरण रहेगा।

आर्य समाज छपरौली के प्रधान श्री कृष्णपाल खलीफा जी की स्मृति में दिनांक 3 नवम्बर, 2022 को आर्य समाज छपरौली के प्रांगण में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन सम्पन्न

श्री कृष्णपाल खलीफा जी आर्य समाज छपरौली एवं क्षेत्र के एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ थे – स्वामी आर्यवेश

श्री खलीफा जी ने कुश्ती के क्षेत्र में युवाओं को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई – स्वामी आदित्यवेश

कुश्ती जगत में अपनी सेवाओं के लिए खलीफा जी सदैव याद किये जायेंगे – सुभाष पहलवान

आर्य समाज, छपरौली के यशस्वी प्रधान और आर्य व्यायामशाला के संस्थापक एवं संचालक स्व. पहलवान श्री कृष्णपाल खलीफा जी का गत दिनों 1 नवम्बर, 2022 को रात्रि लगभग 1 बजे असमय निधन हो गया। श्री खलीफा जी का पिछले दिनों अचानक स्वास्थ्य खराब हो गया था और उन्हें उपचार के लिए मेरठ ले जाया गया था और उनका उपचार चल रहा था परन्तु डॉक्टरों की टीम उन्हें बचा नहीं पाई। पहलवान जी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया तथा उनकी स्मृति में दिनांक 3 नवम्बर, 2022 को आर्य समाज छपरौली, बागपत, उत्तर प्रदेश में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, मानव सेवा प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री चन्द्रदेव शास्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष एवं श्रीमती होशियारी आर्य कन्या महाविद्यालय रठौड़ा, जिला बागपत के अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, हिन्द केसरी श्री सुभाष पहलवान, आर्य समाज के पूर्व प्रधान प्रिं. महक सिंह, छपरौली क्षेत्र के पूर्व विधायक श्री वीरपाल राठी, पूर्व विधायक श्री अजय सिंह, मा. धर्मवीर सिंह, पहलवान नरेन्द्र उर्फ पप्पू, पहलवान तेजपाल सिंह, श्री राजेन्द्र सिंह आर्य प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बागपत, श्री अवनीश आर्य रठौड़ा, श्री राजेन्द्र आर्य रठौड़ा, श्री विक्रम सिंह ठेकेदार कंडेरा आदि के अतिरिक्त स्व. पहलवान कृष्णपाल जी के शिष्य सर्वश्री प्रवीण पहलवान, अंकित पहलवान, नीटा पहलवान, मनोज पहलवान, धर्मेन्द्र पहलवान आर्य कार्यकारी प्रधान आर्य समाज छपरौली आदि ने भी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की और संयोजन श्री योगेन्द्र कुमार आर्य ने संभाला। श्रद्धांजलि सभा से पूर्व शांति यज्ञ का भी आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों लोगों ने आहुति देकर दिवंगत आत्मा की शांति की कामना की। यज्ञ का संचालन स्वामी आर्यवेश जी के देख–रेख में श्री योगेन्द्र आर्य ने किया। यज्ञ में यजमान के आसन पर स्व. पहलवान कृष्णपाल खलीफा जी के शिष्य एवं विशिष्ट सहयोगी कुश्ती कोच पहलवान धर्मेन्द्र (भूरा) तथा स्व. कृष्णपाल जी के भतीजे श्री दिव्यांशु ने यजमान का स्थान ग्रहण कर यज्ञ को सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी ने शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य समाज मंदिर महाशय धर्मचन्द गांधी यज्ञशाला, मानसरोवर कालोनी, रोहतक का चतुर्थ वार्षिक समारोह उत्साह के साथ मनाया गया

आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी रहे मुख्य अतिथि

कार्यक्रम की अध्यक्षता हरियाणा डी.ए.वी. के क्षेत्रीय अधिकारी डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी जी ने की

पंजाब डी.ए.वी. के निदेशक श्री जे.पी. शूर जी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सहसचिव श्री सत्यपाल आर्य जी रहे विशिष्ट अतिथि

श्रीमती उर्मिला देवी के साथ संगीता देवी व पुष्पा देवी जी ने की भजन की प्रस्तुति

आर्य समाज महाशय धर्मचन्द गांधी मानसरोवर कालोनी, रोहतक का चतुर्थ वार्षिक समारोह 30 अक्टूबर, 2022 को विशाल स्तर पर मनाया गया। कार्यक्रम में हजारों लोगों की उपस्थिति से वातावरण उत्साह से ओत–प्रोत था। प्रातःकाल 8.30 से 9.30 बजे तक 21 कुण्डीय यज्ञ किया गया जिसमें ठाकुर बसंतदास, आचार्य शम्भू मित्र शास्त्री, श्री अभय कुमार शास्त्री व श्री बृजकिशोर शास्त्री ने पौरोहित्य का कार्य किया। समारोह का आयोजन चौ. बक्साराम स्मृति पार्क में किया गया था। इस कार्यक्रम में यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि के रूप में पधारे उनके अतिरिक्त युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी मुक्तिवेश जी, आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी, स्वामी शान्तानन्द जी, आर्य गौरव श्री जे.पी. शूर निदेशक डी.ए.वी. स्कूल्स, श्री सत्यपाल आर्य सहमंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली आदि के अतिरिक्त राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी, केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली की अध्यक्षा श्रीमती उर्मिला देवी एवं संगीता देवी व पुष्पा देवी आदि संन्यासी एवं विद्वान् सम्मिलित हुए। इस पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा विद्वान् हरियाणा डी.ए.वी. के क्षेत्रीय अधिकारी डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी ने की।

कार्यक्रम में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए श्री जे.पी. शूर ने आर्य समाज को अपनी प्रेरणा का मुख्य स्रोत बताया। उन्होंने कहा कि डी.ए.वी. की स्थापना देश की आजादी के आन्दोलन के दौरान की गई और डी.ए.वी. से अनेक विद्वान् निकले जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपने कार्यों से यश प्राप्त किया।

आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी ने कहा कि हमें अपने जीवन को वेद से जोड़ना चाहिए, क्योंकि वेद ईश्वर का ज्ञान है और ईश्वरीय ज्ञान से ही हमारी आत्मा की उन्नति हो सकती है।

श्री सत्यपाल आर्य जी ने कहा कि आर्य समाज की वर्तमान समय में और अधिक आवश्यकता है। आर्य समाज के बिना धार्मिक अन्धविश्वास एवं नैतिक पतन को रोक पाना सम्भव नहीं दिखता।

स्वामी शान्तानन्द जी ने कहा कि वेद में दो ही संकेत है – एक विधि और एक निषेध। अर्थात् वे जो कार्य करने आवश्यक हैं तथा वे कार्य जो नहीं करने आवश्यक हैं। वेद हमें जहां अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देते हैं, वहीं गलत कार्य को निषेध करने की आज्ञा देते हैं। इसी को यदि हम अपने जीवन में उतार लें और गलत कार्यों से बचकर अच्छे कार्यों में जीवन लगायें तो हमारा जीवन सफल हो जायेगा।

सारस्वत मोहन मनीषी जी ने अपनी जोशीली कविताएं सुनाकर लोगों को जोश से भर दिया और उन्होंने स्पष्ट कहा कि जब तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों के अनुसार और मनु के विधान के अनुसार राज्य की तथा समाज की व्यवस्था नहीं होगी तब तक मानव मात्र का कल्याण नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि आज जिस प्रकार से पाखण्ड को बढ़ाया जा रहा है वह किसी भी प्रकार से स्वीकार्य नहीं हो सकता। उन्होंने आह्वान किया कि गुरुकुल शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये और आर्य समाज को और अधिक सक्रिय किया जाये।

इस अवसर पर श्रीमती उर्मिला आर्या एवं उनकी सहयोगी बहनों ने गीत सुनाकर लोगों को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वामी आर्यवेश जी ने जहाँ आर्य समाज के गौरवपूर्ण शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य समाज भरूआ, सुमेरपुर, जिला–हमीरपुर (उत्तर प्रदेश) में 46वाँ विश्व कल्याण महायज्ञ एवं बुन्देलखण्ड आर्य महासम्मेलन 27 से 30 अक्टूबर, 2022 तक भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये – स्वामी आर्यवेश

वेद समस्त ज्ञान–विज्ञान का आदि स्रोत है – आचार्य विष्णुमित्र

युवाओं को अधिक से अधिक संख्या में आर्य समाज के साथ जोड़ा जायेगा – डॉ. विवेक आर्य

स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज का सबसे अधिक योगदान रहा है – जयनारायण आर्य

आर्य समाज भरूआ, सुमेरपुर, जिला–हमीरपुर (उ. प्र.) के तत्वाधान में बुन्देलखण्ड आर्य महासम्मेलन एवं विश्व कल्याण महायज्ञ का भव्य आयोजन 27 से 30 अक्टूबर, 2022 तक किया गया। जिसमें बांदा, महोबा, महराजपुर, आर्य समाज रींवा, बाराबंकी, कानपुर तथा अन्य जिलों से बड़ी संख्या में लोग सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम में आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी मुक्तिवेश जी, वैदिक विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र जी (बिजनौर), मध्य प्रदेश विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री जयनारायण आर्य, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री योगेश दत्त आर्य (बिजनौर), श्री प्रदीप कुमार शास्त्री (फरीदाबाद), श्री रामसेवक आर्य (हमीरपुर) आदि विद्वानों ने अपने प्रवचनों एवं भजनों के माध्यम से श्रोताओं को वेद ज्ञान से ओत–प्रोत किया। कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक यज्ञ, प्रवचन एवं भजनोपदेश का कार्यक्रम चलता था तथा मध्यान्ह 1 से 5 बजे तक एवं रात्रि 7 से 11 बजे तक चलता था।

कार्यक्रम का उद्घाटन आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने अपने कर–कमलों से ध्वजारोहण करके किया। ध्वजारोहण के पश्चात् नगर में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें आर्य वीरदल के युवकों एवं युवतियों का जोश देखते ही बनता था। आर्य वीरों एवं आर्य वीरांगनाओं ने शोभा यात्रा के दौरान लाठी, तलवार एवं आसनों का प्रदर्शन करके नगरवासियों को अत्यन्त प्रभावित किया। इस शोभा यात्रा का संयोजन आर्य वीरदल पूर्वी उत्तर प्रदेश के संयोजक डॉ. विवेक आर्य ने संभाला तथा श्री दिनेश आर्य, श्री उमेश आर्य एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने सम्पूर्ण व्यवस्था का दायित्व कुशलता के साथ निभाया। कार्यक्रम के दौरान तीनों दिन विभिन्न सम्मेलनों के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य विष्णुमित्र जी, पं. योगेशदत्त आर्य जी आदि के प्रवचन एवं उपदेश होते रहे।

मध्य प्रदेश विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री जय नारायण आर्य ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द

सरस्वती तथा उनके अनुयायियों का सर्वाधिक योगदान रहा है। स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम स्वराज्य का नारा दिया और उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिख दिया था कि विदेशी राजा स्वदेशी राजा से अच्छा नहीं हो सकता। चाहे वह माता–पिता के समान भी व्यवहार करे तो भी स्वदेशी राजा ही उससे अच्छा होता है।

अपने प्रवचनों में आचार्य विष्णुमित्र जी ने ईश्वर के सच्चिदानन्द नाम की प्रभावशाली व्याख्या शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द धाम बाजार, हंसली, अमृतसर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 139वाँ निर्वाण दिवस बनाया गया

वेद ज्ञान ही सब प्रकार के पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को दूर कर सकता है – ओम प्रकाश आर्य

30 अक्टूबर, 2022 को आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम बाजार, हंसली, अमृतसर में महर्षि दयानन्द जी का 139वाँ निर्वाण दिवस श्री ओम प्रकाश आर्य जी की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य दयानन्द शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में गायत्री महायज्ञ से प्रारम्भ किया गया। महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर 50 जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरित किया गया। इस अवसर पर मुख्यअतिथि श्री विपिन अग्रवाल, श्री अश्विनी अग्रवाल, श्री बालकृष्ण शर्मा अध्यक्ष नशा विरोधी संगठन, श्रीमती शारदा बाधवा विशेष रूप से उपस्थित हुए। ऋषि निर्वाण दिवस पर श्रीमती वंदना पसाहन, सुनीता पसाहन, श्री नरेन्द्र पंछी, भजन गायक, श्रीमती सुलोचना आर्या ने ऋषि भजनों को गाकर जनसमूह को मंत्र मुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर श्री ओम प्रकाश आर्य जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी इस देश के प्रथम समाज सुधारक हुए जिन्होंने वेद ज्ञान को प्रसारित कर समाज से पाखण्ड और अन्धविश्वास को दूर करने का कार्य किया तथा समाज को समतामूलक समाज बनाने में अहम भूमिका निभाई। नारी उत्थान के लिए नारी शिक्षा का पुरजोर समर्थन किया। ऋषि दयानन्द जी ने वेद ज्ञान को मानव कल्याण का सर्वोत्तम ज्ञान बताया। स्वामी दयानन्द जी ने वेद ज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने के लिए आजीवन लगे रहे। ऋषि दयानन्द जी द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलते हुए यह आर्य समाज आज भी कार्य कर रहा है। महर्षि के निर्वाण दिवस के अवसर पर आर्य समाज के माध्यम से 50 जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरित करने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम बाजार, हंसली यह कार्य पिछले दो वर्षों

से लगातार हर महीने में करता आ रहा है। इस आर्य समाज द्वारा प्रत्येक महीने के आखिरी रविवार को जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरित किया जाता है।

महर्षि के निर्वाण दिवस के अवसर पर क्षेत्र के अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित हुए जिनमें मुख्यरूप से श्री अर्जुन कुमार, श्री राज कुमार, श्री अशोक आर्या, श्री पंकज वर्मा, कमलेश रानी, कोमल, संदीप शर्मा, वीरन्दर शर्मा, पूनम, अनूप कुमार, आर्यमन, अभिजीत आदि उपस्थित रहे।

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य समाज छपरौली के प्रधान श्री कृष्णपाल खलीफा जी की स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा

सुझाव दिया कि स्व. कृष्णपाल सिंह जी की स्मृति में प्रति वर्ष उनकी पुण्यतिथि को विशेष रूप से मनाया जाये और उसमें विशेष उपलब्धि प्राप्त करने वाले पहलवानों को सम्मानित किया जाये। स्वामी जी के इस सुझाव पर गांव के श्री धमेन्द्र खोखर जी ने घोषणा की कि वे प्रतिवर्ष स्वर्ण पदक लाने वाले पहलवानों को एक लाख रुपया, रजत पदक लाने वालों को 51 हजार रुपया तथा कांस्य पदल विजेताओं को 31 हजार रुपया सम्मान स्वरूप दिया करेंगे। ये पारितोषिक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त करने वाले पहलवानों को ही प्रदान किये जायेंगे।

अपने अध्यक्षीय वक्तय में स्वामी आर्यवेश जी ने जहाँ पारिवारिकजनों एवं आर्य व्यायामशाला में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे पहलवानों को दुःख की इस घड़ी में शांत्वना प्रदान की वहीं दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री खलीफा जी आर्य समाज एवं क्षेत्र के एक मजबूत स्तम्भ थे। उनके देहावसान से क्षेत्र एवं समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। उनका व्यक्तित्व, चरित्र, ईमानदारी, निष्ठा एवं आत्म विश्वास आदि गुणों से विभूषित था। उन्होंने अपना पूरा जीवन आर्य समाज के कार्यों एवं क्षेत्र के नौजवान को कुश्ती के गुर सिखाने में लगाया। उन्होंने कुश्ती के क्षेत्र में अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहलवानों को तैयार किया जिससे क्षेत्र की गरिमा बढ़ी। खलीफा जी के अचानक निधन से जहाँ आर्य समाज छपरौली की अपूर्णीय क्षति हुई है वहीं क्षेत्रवासियों ने कुश्ती के क्षेत्र में भी एक कुशल गुरु एवं प्रशिक्षक खो दिया है। आज यहाँ उपस्थित लोगों को यह संकल्प लेना चाहिए कि खलीफा जी द्वारा चलाये जा रहे कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना–अपना सहयोग तन–मन–धन से देंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। स्वामी जी ने जहाँ व्यायामशाला के कार्य को नियमित चलाने के लिए पहलवान धर्मेन्द्र (भूरा) को दायित्व सौंपने का प्रस्ताव रखा वहीं आर्य समाज की गतिविधियों को व्यवस्थित चलाने के लिए आर्य समाज के सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया। स्वामी जी के वक्तव्य के उपरान्त पहलवान धर्मेन्द्र (भूरा) को पगड़ी पहनाकर व्यायामशाला का कार्यभार सौंपने की औपचारिकता भी पूरी की गई।

इस पूरे कार्यक्रम का उपसंहार स्व. श्री कृष्णपाल खलीफा जी के भाई श्री रणपाल सिंह राणा ने सभी आगन्तुक महानुभावों का जहाँ परिवार की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया वहीं उन्होंने लोगों को आश्वस्त किया कि वे आर्य व्यायामशाला को और आर्य समाज की गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने के लिए हर प्रकार से अपना सहयोग देंगे। यदि आवश्यकता हुई तो आर्य व्यायामशाला की व्यवस्था के लिए वे दिन–रात यहाँ पर रहने के लिए भी समय देंगे। इस श्रद्धांजलि सभा की पूरी व्यवस्था पहलवान धर्मेन्द्र (भूरा), पहलवान श्री प्रवीण आर्य, आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान पहलवान धर्मेन्द्र आर्य, श्री योगेन्द्र आर्य, अवनीश आर्य, श्री रणपाल सिंह राणा आदि ने तन्मयता के साथ संभाली।

राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जयन्त चौधरी, केन्द्रीय मंत्री श्री संजीव बालियान, के शोक संदेश भी पढ़कर सुनाये गये। उन्होंने अपने संदेश में जहाँ दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी वहीं परिवारजनों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की।

पृष्ठ 5 का शेष

आर्य समाज मंदिर महाशय धर्मचन्द गांधी यज्ञशाला, मानसरोवर कालोनी, रोहतक का.....

इतिहास पर प्रकाश डाला वहीं उन्होंने सभी लोगों से अपील की कि वे अपने घरों में नियमित यज्ञ करने का संकल्प लें। उन्होंने कहा कि आज पर्यावरण नष्ट हो रहा है, प्रदूषण बढ़ रहा है। अतः यह आवश्यक है कि बिगड़ते हुए पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए यज्ञ की परम्परा को आगे बढ़ाया जाये। घर–घर में यज्ञ हों और सार्वजनिक स्थानों पर भी यज्ञ आयोजित किये जायें ताकि प्रदूषण को समाप्त किया जा सके। स्वामी आर्यवेश जी ने यह भी कहा कि आज लोगों का आन्तरिक पर्यावरण भी खराब हो रहा है और लोग संकीर्णता, जातिवाद एवं विभिन्न कुरीतियों से ग्रसित होते जा रहे हैं। अतः यह आवश्यक है कि आन्तरिक पर्यावरण को भी ठीक किया जाये। इसके लिए यम, नियम का पालन करना और नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाया जाये।

इस अवसर पर सभी विद्वानों एवं आमंत्रित वक्ताओं का आयोजनकर्ताओं की ओर से स्वागत किया गया साथ ही जिन महानुभावों ने यजमान बनकर या आर्थिक सहयोग देकर अपना योगदान दिया उन्हें भी सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के प्रेरणास्रोत श्री नन्दलाल गांधी तथा प्रधान श्री सुरेश मित्तल के अतिरिक्त जिन महानुभावों ने अथक परिश्रम किया उनमें श्री दिनेश नरूला सचिव, श्री ओम प्रकाश नाशा कोषाध्यक्ष, श्री राजेन्द्र प्रसाद नाशा उपप्रधान, श्री अशोक चौधरी, श्री रविन्द्र गर्ग, श्री राजेश मित्तल, श्री यशपाल भाटिया, श्री अजय आर्य, श्री गुलशन शाह, श्री रमेश मल्होत्रा, श्री प्रिंस चुग, श्री जगदीश नागपाल, श्री राजकुमार जुनेजा, श्री हर्षवर्धन नागिया, श्री सुरेश गांधी, श्री सुनील आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। समारोह में सर्वश्री डॉ. जगदेव सिंह जी, श्री महावीर शास्त्री (धीर), श्री कृष्ण कुमार शास्त्री (बोहर), डॉ. यशदेव शास्त्री, श्री भलेराम आर्य, श्री रामपाल आर्य, श्री जिले सिंह आर्य, पं. नरेश आर्य, श्री कृष्ण प्रजापति (टिटौली), श्री राजीव आर्य (नई दिल्ली), श्री संजीव शास्त्री (आर्य समाज मॉडल टाउन), श्री देशराज आर्य आदि महानुभाव भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। कार्यक्रम के पश्चात् ऋषि लंगर की समुचित व्यवस्था की गई थी जिसका प्रबन्ध समाजसेवी माता केलादेवी एवं श्री रामजीवन गर्ग जी तथा श्री रविन्द्र गर्ग जी के सौजन्य से हुआ।

पृष्ठ 5 का शेष

आर्य समाज भरूआ, सुमेरपुर, जिला–हमीरपुर (उत्तर प्रदेश) में 46वाँ विश्व कल्याण महायज्ञ......

करके श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने ईश्वर उपासना के सम्बन्ध में भी अपने प्रभावशाली प्रवचन प्रस्तुत किये।

यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के भौतिक एवं आध्यात्मिक स्वरूप पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए यज्ञ को जहाँ वैज्ञानिक प्रक्रिया बताया वहीं यज्ञ को आत्मा की उन्नति का साधन भी कहा। स्वामी जी ने आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत करते हुए आर्यों का आह्वान किया कि आगामी वर्ष 2024 में जब सम्पूर्ण आर्य जगत महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशती मनायेगा तब आर्य वीरदल और आर्य युवक संगठनों को कम से कम एक लाख युवक एवं युवतियों के साथ शक्ति प्रदर्शन करने की योजना बनानी चाहिए। आज हमारे लिए यह एक चुनौती है कि लोग योजनाबद्ध तरीके से महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की हर स्तर पर उपेक्षा कर रहे हैं। कोई भी सरकार आती है वह आर्य समाज का प्रयोग तो करना चाहती है किन्तु वे आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को उचित सम्मान एवं प्रतिष्ठा देने से परहेज करती है। अतः आर्यों को स्वयं ही इस दिशा में कदम उठाना होगा और जन–जन तक महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज के स्वतंत्रता आन्दोलन, समाजसुधार एवं शिक्षा आदि क्षेत्रों में ऐतिहासिक योगदान को पहुंचाना होगा। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज को हम उपयोगी आर्य समाज बनायें और आम आदमी के दुःख–दर्द को समझकर उनके साथ खड़े हों। उनकी मदद के लिए हर सम्भव सहयोग एवं सहायता करने की कोशिश करें। जब लोग आर्य समाज को अपना हितैषी एवं पहरेदार समझ लेंगे तभी आर्य समाज का उद्देश्य सही अर्थों में पूरा होगा। आर्य समाज का इतिहास इस बात का साक्षी है कि समय–समय पर देश की ज्वलन्त समस्याओं को लेकर आर्य समाज ने बड़े–बड़े आन्दोलन किये हैं। जिनमें स्वतंत्रता आन्दोलन, हैदराबाद आन्दोलन, हिन्दी सत्याग्रह, गोरक्षा आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन, बेटी बचाओ आन्दोलन, सतीप्रथा विरोधी आन्दोलन, किसान आन्दोलन आदि मुख्य हैं। आज देश में जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, धार्मिक पाखण्ड, महिला उत्पीड़न तथा शोषण जैसी ज्वलन्त समस्याएं देश को कमजोर कर रही हैं। इन ज्वलन्त मुद्दों पर आर्य समाज के एक–एक कार्यकर्ता को आम जनता का नेतृत्व करना चाहिए और इन बुराईयों को मिटाने के लिए कार्य करना चाहिए। आज पाखण्ड चरम सीमा पर है। बड़े–बड़े पदों पर बैठे राजनेता, फिल्म अभिनेता, बड़े–बड़े उद्योगपति, बड़े–बड़े प्रशासनिक अधिकारी अर्थात् समाज के अग्रिम पंक्ति के लोग धार्मिक पाखण्ड को बढ़ाने में अपने प्रभाव का प्रयोग कर रहे हैं। जिससे आर्य समाज के लिए और अधिक चुनौतियाँ बढ़ती जाती हैं, क्योंकि जब राज्य की शक्ति अवैदिक और अवैज्ञानिक विचार को बढ़ाने लग जाये, शराब का व्यापार करने लग जाये, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के बदले उसे फलने–फूलने दे तो ये बुराइयाँ तेजी के साथ बढ़ेंगी और समाज को खोखला कर देंगी। धर्म की रक्षा राज्य करता है और राज्य की रक्षा धर्म करता है किन्तु आज उल्टा हो रहा है। राज्य अधर्म की रक्षा करता है, अवैदिक मान्यताओं को आगे बढ़ाने के लिए हजारों करोड़ रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है ऐसी स्थिति में आर्य समाज को गम्भीरता से सोचना होगा और निर्णायक संघर्ष प्रारम्भ करना होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने पूरे आर्य जगत को एक सूत्र में बंधकर अपनी निजी महत्त्वाकांक्षाओं तथा निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर कार्य करने की अपील की और कहा कि समय की मांग है कि महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के सम्मान एवं प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखने के लिए सभी आर्यजन संगठित हों और महर्षि के स्वप्नों को साकार करने के लिए संकल्पित हों।

इस अवसर पर पूर्वी आर्य वीरदल के संयोजक डॉ. विवेक आर्य ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि अधिक से अधिक युवकों को आर्य वीरदल में लाने के लिए वे पूरी ताकत लगायेंगे। इस पूरे आयोजन के संयोजक श्री रामेश्वर प्रसाद आर्य रहे तथा आर्य समाज के प्रधान श्री हरनारायण आर्य, मंत्री श्री प्रेम कुमार श्रीवास्तव तथा कोषाध्यक्ष श्री गणेश प्रसाद आर्य आदि ने अथक परिश्रम करके कार्यक्रम को सफल बनाया। यह कार्यक्रम क्षेत्र के प्रतिष्ठित संन्यासी स्वामी रामानन्द जी महाराज के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम की पूरे क्षेत्र में धूम मची रही।

लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल जी की 147वीं जयन्ती पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने ऑन लाईन कार्यक्रम आयोजित करके किया नमन

आधुनिक भारत के शिल्पीकार थे सरदार पटेल – अनिल आर्य

निर्भीकता व निर्णायकता के पर्याय थे सरदार पटेल – डॉ. गजराज सिंह आर्य

(सोमवार) 31 अक्टूबर, 2022 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में सरदार वल्लभ भाई पटेल की 147वीं जयन्ती पर आर्य गोष्ठी का आयोजन कर स्मरण किया गया। उल्लेखनीय है कि सरदार पटेल का जन्म गुजरात के नाडियाड में 31 अक्टूबर, 1875 को हुआ था। भारत को संगठित बनाने में सरदार पटेल की विशेष भूमिका मानी जाती है। सरदार पटेल को भारत की 565 रियासतों को विलय करके अखण्ड भारत के निर्माण के लिए याद किया जाता है।

इस ऑन लाईन गोष्ठी के अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा कि सरदार पटेल आधुनिक भारत के शिल्पकार थे, वह स्पष्ट एवं निर्भीक वक्ता रहे, उनकी निर्णायक क्षमता अद्भुत थी। स्वतन्त्रता के बाद उन्हें भारत का उपप्रधानमन्त्री तथा गृहमन्त्री बनाया गया। गृहमन्त्री होने के कारण रजवाड़ों के भारत में विलय का विषय उनके पास था। सभी रियासतें स्वेच्छा से भारत में विलीन हो गयीं थी, परन्तु जम्मू–कश्मीर, जूनागढ़ तथा हैदराबाद ने भारत में विलय करने से कतराते रहे। परन्तु सरदार पटेल की प्रेरणा से जूनागढ़ में जन विद्रोह हुआ और वह भारत में मिल गयी। हैदराबाद में आर्य समाज द्वारा चलाये गये आन्दोलन के

आगे हैदराबाद के निजाम ने घुटने टेक दिये और वह भी रियासत भारत में विलय हो गई। यदि सरदार पटेल न होते तो हिन्दुस्तान का वर्तमान स्वरूप ऐसा न होता। हिन्दुस्तान खण्ड–खण्ड में विभाजित होता। रजवाड़ों, रियासतों का हिन्दुस्तान में विलय करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आजादी का मतलब समझें और राष्ट्र की एकता अखण्डता की रक्षा का संकल्प लें। देश की वर्तमान विषम परिस्थितियों में सरदार पटेल बहुत याद आते हैं आज पुनः उनकी नीतियों पर चलने की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि डॉ. गजराज सिंह आर्य (फरीदाबाद) ने कहा कि सरदार पटेल गंभीर चिन्तक, बहुआयामी, आदर्शवादी व व्यवहारिक व्यक्तित्व के धनी थे। राष्ट्र के प्रति उनका प्रेम अद्वितीय था। इनके अतिरिक्त अन्य वक्ताओं ने भी अपने–अपने विचार रखे। अन्त में राष्ट्रीय महामंत्री महेन्द्र भाई ने कहा कि भारत के राजनीतिक एकीकरण में लौहपुरूष, भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल जी के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता।

कार्यक्रम के दौरान गायिका पिंकी आर्या, रजनी चुग, सुनीता अरोड़ा, रजनी गर्ग, ईश्वर देवी, कमला हंस, जनक अरोड़ा, विमला आहूजा, मधु खेड़ा, प्रवीण आर्या, रविन्द्र गुप्ता, बिंदु मदान, कृष्णा गांधी, उषा सूद आदि ने गीतों के माध्यम से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

Importance of Gayatri

- D. D. sharma, Amritsar

Divine expressions of vedic scholars and great men of India.

1. I can say without any hesitation that the meaningful reciter achieves materialistic and spiritualistic endowments from God Supreme through the recitation of this mantra in this world and also in the world next when he leaves behind his mortal remains in the mortal world. God gives him a sharp discriminative intellect to sift truth from untruth. This is a gigantic attainment of the life of a reciter.

(Swami Dayanand Saraswati)

2. If the Gayatri Mantra is recited with a peaceful mind, all difficulties and troubles vanish. It is the most useful mantra for the development of soul.

(Mahatma Gandhi)

3. I can describe here that there is nothing better than this mantra. When it is recited one realises that the whole universe is his home.

(Dr. Rabindra Nath Tagore)

4. I can say that if one wants to go from wrong to the right way, one should worship the gayatri mantra. All impurities of mind are removed by its recitation.

(Lokmanya Bal Gangadhar Tilak)

5. I can say with confidence that the Gayatri Mantra has hypnotic powers. The reciter gets the power. After my 56 years' experience, I am in a position to say that the Gayatri Mantra has a hypnotic influence and endows its reciter with this power, for good.

(Mahatma Hans Raj)

6. I regret to mention here that I was a dull student in my class. Whatever the teachers taught me in the class was forgotten by me after a short time. A very famous vedic scholar visited my house and I consulted him. He advised me for the recitation of Gayatri Mantra/Guru Mantra for 3 hours early in the morning . I acted upon his advice and started the recitation of this mantra early in the morning from 3 A.M. to 6 A.M. with the result that it sharpened my intellect and made my memory retentive and understanding subtle.

(Mahatma Anand Swami Saraswati)

In this strife torn world, full of problems and personal afflictions, agonies and miseries plaguing one and all, the urge for the realisation of God is being acutely felt now. People minutely ponder over this matter and reach an irresistable conclusion that the solution to their problems lies in seeking His Divine Graciousness and knowing about God. The present performance is a humble attempt on my part to contribute whatever little I can do to enlighten the minds of the public with divine wisdom. Only the Gayatri Mantra/Guru Mantra can serve the purpose of the people and is narrated below with meanings of every word.

ओ३म् भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात।

यजुर्वेद ३६/३

Om is the Divine and orginal name of God. It is the most excellent and illustrious name of the Almighty father. It comprises three letters अ, उ और म (Akar, Ukar and Makar). Akar denotes (1) Virat (2) Agni and (3) Vishav etc. Ukar indicates:- (1) Hiranya Garbha (2) vaya (3) tegas. Makar signifies (1) Ishwar (2) Aditya (3) Prajeya.

Elucidition : Oh Omnipotent, Omnipresent and Omnisicient, Thou art our nearest and dearest life breath. Keep us away from the evil intention and tendencies and physical sufferings. May we have the pure vision in our mind. May we not only attain the physical prosperity but also the ultimate emancipation. Oh Almighty Father bestow upon us sharp discrimination intellect so that we should be able to distinguish what is impure, what is truth and what is untruth, what is justice and what is injustice.

The Rishi, author of the Kath Upanishada has very beautifully depicted the elucidation of Om.

All the Vedas reveal the Supreme Magnanimity of Om likewise the saints also narrate its importance. The celebates also observe celebacy to know its divine vastness. It is the Divine and original name of God. Other qualities signifies His Divine Attributes, Divine and wonderful doabilities and Divine Nature.

The Vedic Gayatri Mantra/Guru Mantra as depicted by the great vedic scholars was sung by the Gracious Lord Supreme in the beginning of the creation, before His revelation of the four vedas to four Rishis Namely (1) Agni (2) Vayu (3) Aaditya and (4) Angira This Divine Mantra has its own divine characteristics which are given below:

(1) It removes all the thorny bushes confronting the way of a recitor and makes his life sublime. It opens the gateway of Heaven for his liberation.

(2) The recitations of the Gayatri Mantra makes a man fearless and makes his intellect steady and discerning.

(3) It bestows upon a recitor true knowledge, enables him to advance on the path of Righteousness and brings about happiness and contentment. It liberates the reciter from the cycle of births and deaths.

(4) It affords every kind and triumph and perfection in life. It gives grim determination, resolute will and courage.

(5) Although, all the vedic mantras are elevating and inspiring but the Gayatri Mantra holds a supreme and unique position among them.

(6) As the spring season is the best of all the seasons around the year because the plants bear new leaves and cast off worn out ones and are laden with flowers and look beautiful in this season. Similarly, the Gayatri Mantra invigorates a person with vitality, resolute will, determination, courage and sound health.

Just as the rain washes off all dirt and dust for everything lying outside and helps the growth of vegetation, similarly, the Gayatri Mantra washes off all the evil tendencies, impurities from the mind and makes the reciter prepared to grasp constructive and positive thoughts.

Thus the meaningful recitation of the Gayatri Mahamantra/ Guru Mantra completely banishes all the darkness of ignorance, dissatisfaction, uneasiness, worry, jealousy, ill-will and malice settled on the mind and pacifies upset, and agitated mind so that peace, harmony and good will may reign.

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

महात्मा नारायण स्वामी जी के 75वें जन्मदिवस पर मुरादाबाद में विशाल आर्य वीर महासम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन

हजारों आर्य वीरों और वीरांगनाओं ने किया शक्ति प्रदर्शन

योगगुरु स्वामी रामदेव जी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी, ठाकुर विक्रम सिंह जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी देवव्रत सरस्वती जी एवं महाशय राजीव गुलाटी जी सहित आदि की रही गरिमामयी उपस्थिति

आचार्य स्वदेश जी अध्यक्ष, श्री ज्ञानेन्द्र गांधी मुख्य संयोजक एवं आचार्य पंकज आर्य रहे संयोजक

दिनांक 14, 15 व 16 अक्टूबर, 2022 को मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश में महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर विशाल आर्य वीर महासम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में हजारों आर्य वीरों और वीरांगनाओं एवं आर्यजनों ने भाग लिया। तीन दिन तक चले इस महासम्मेलन का उद्घाटन 14 अक्टूबर, 2022 को प्रातः 10 बजे ध्वजारोहण के साथ आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी एवं ठाकुर विक्रम सिंह जी ने किया। इससे पूर्व डॉ. प्रियंवदा वेद भारती जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन सम्मेलन की अध्यक्षता श्री जितेन्द्र भाटिया कोषाध्यक्ष आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश ने की। इस सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक संस्थापक वैदिक स्वस्तिपंथा न्यास और उद्बोधन स्वामी आर्यवेश जी तथा ठाकुर विक्रम सिंह जी का रहा। मंच का संचालन गुरुकुल पौंधा के आचार्य धनंजय जी ने किया। अपने उद्बोधन में ठा. विक्रम सिंह जी ने कहा कि बहुत दिनों के बाद आज इतनी बड़ी संख्या में आर्य वीर और आर्य वीरांगनाओं को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि और मैं चाहता हूं कि इसी तरह से आर्य समाज में अधिक से अधिक युवा वर्ग को आगे लाया जाये।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्य वीरदल का यह दायित्व है कि वह आर्य समाज के भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए अधिक से अधिक संख्या में युवाओं को आर्य वीरदल में भर्ती करें। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर अनेक लोगों के जीवन बदले हैं। अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल ने भी सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर ही क्रांति का मार्ग अपनाया था। इसी प्रकार गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे वैज्ञानिक को सत्यार्थ प्रकाश ने आस्तिक बना दिया था। सत्यार्थ प्रकाश

पढ़कर ही अनेक क्रांतिकारियों का जीवन बदला। अतः इस ग्रन्थ को पढ़ने की प्रेरणा सभी आर्य वीरों को देनी चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने आगामी वर्ष 2024 तक एक लाख आर्य वीर तैयार करने की अपील की और आर्य वीरदल के अध्यक्ष स्वामी देवव्रत सरस्वती जी के नेतृत्व में आर्य वीरों को समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा दी। स्वामी जी ने यह भी कहा कि आज हमारी स्थिति बड़ी दयनीय हो चुकी है। हमलोग राजनेताओं से अपेक्षा रखते हैं कि वे महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्य समाज का नाम अपने व्याख्यान में लेवें, किन्तु भीख मांगने से कोई चीज नहीं मिला करती, हम स्वयं महर्षि दयानन्द और आर्य समाज को इतना अधिक प्रसिद्ध कर दें, प्रचारित कर दें कि जन–जन की जुबान पर महर्षि दयानन्द जी का नाम अंकित हो जाये। आर्य वीरदल की स्थापना को वर्ष 2027 में 100 होने जा रहे हैं। अतः आर्य वीरदल के कार्य को अब युद्ध स्तर पर किया जाना चाहिए। इस समारोह में अपनी पूरी शक्ति लगाकर इसे ऐतिहासिक समारोह बनाने वाले आर्य वीरदल के कार्यकारी मुख्य संचालक आचार्य पंकज आर्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने उनकी दीर्घायुष्य की कामना की और उन्हें हर प्रकार का सहयोग देने की घोषणा की।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री जितेन्द्र भाटिया ने सभी वक्ताओं एवं नेताओं का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यदि आप सबका सान्निध्य एवं समर्थन मिलता रहा तो आर्य वीरदल अवश्य ही एक नई शक्ति के रूप में उभरेगा।

इस सम्मेलन में स्वामी देवव्रत सरस्वती जी ने भी अपना प्रेरणादायक प्रवचन देकर आर्य वीरों को उत्साहित किया। उद्घाटन सम्मेलन जोश–खरोश के साथ सम्पन्न हुआ और उसके पश्चात् मातृ–शक्ति और आर्य वीरांगना सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन के अध्यक्ष पद को कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की आचार्या डॉ. सुमेधा जी ने सुशोभित किया और मंच का संचालन डॉ. पवित्रा वेदालंकार कन्या गुरुकुल सासनी हाथरस ने किया। कार्यक्रम में डॉ. प्रियंवदा वेद भारती, आचार्या धारणा जी, आचार्या सुलभा शास्त्री जी, डॉ. मन्नू आर्या आदि विदुषियों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

आर्य वीर महासम्मेलन के इस कार्यक्रम से एक नई आशा का संचार हुआ है। इस पूरे आयोजन में मुरादाबाद के आर्यनेता श्री ज्ञानेन्द्र गांधी जी ने अथक परिश्रम करके पूरे कार्यक्रम का संयोजन किया।

प्रथम दिन के उद्घाटन समारोह के बाद निरन्तर 15 एवं 16 अक्टूबर को भी कवि सम्मेलन, आज की शाम दयानन्द के नाम, महर्षि दयानन्द की विश्व को देन, आर्य समाज नियम व संगठन सम्मेलन, आर्य वीर सम्मेलन, संकल्प एवं समापन समारोह, आर्य वीर और वीरांगना कौशल प्रदर्शन सम्मेलन, आर्य वीर/वीरांगना शाखा एवं निर्भीक सेना महात्मा नारायण स्वामी सम्मेलन आदि कार्यक्रम हुए जिनमें योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज, प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी, श्री जयनारायण आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा विदर्भ मध्य प्रदेश, महाशय श्री राजीव गुलाटी एम.डी.एच., डॉ. सत्यपाल सिंह सांसद, आचार्य स्वदेश जी सहित अनेक विद्वान्, नेता, भजनोपदेशक आदि ने भी अपने व्याख्यान प्रस्तुत किये।

इस ऐतिहासिक आयोजन में श्री दयाशंकर आर्य, मा. कृष्णपाल आर्य, श्री उमेशचन्द्र आर्य, डॉ. हरि सिंह आर्य, श्री रमेश सिंह आर्य एडवोकेट, मा. समर सिंह आर्य, श्री विनय लोहिया आदि ने अथक प्रयास करके कार्यक्रम को सफल बनाया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।